बाइबल टीचर

वर्ष 18 | नवम्बर 2021 | अंक 12

सम्पादकीय

वचन का प्रचार कर

प्रेरित पौलुस ने युवा प्रचारक तीमुथियुस को लिखते हुए कहा था कि, ''तू वचन का प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डांट और समझा'' (2 तीमु. 4:2) यह ऐसे शब्द है जो प्रत्येक प्रचारक के लिये अवश्य है। एक ऐसा समय था जब मसीह की कलीसिया के प्रचारक बाइबल की आयतों को दिखाकर प्रचार करते थे परन्तु आज यह बात इतनी देखने को नहीं मिलती। हमारे प्रचार में सफाई और सच्चाई होनी चाहिए। आज बहुत से प्रचारक साम्प्रदायिक कलीसियाओं के प्रचारकों के साथ मिलकर बाइबल के खरे उपदेश को भूल जाते हैं।

आज हमारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि हम मसीह का प्रचार करे। और मसीह के प्रचार का अर्थ है उसकी कलीसिया का प्रचार जो उसकी देह है। (इफि. 5:23)। यीशु अपनी कलीसिया का सिर है तथा इसका उद्धारकर्त्ता है। (इफि. 1:22-23; कुलु. 1:18)। यीशु के बारे में लोगों को बताना है कि वह परमेश्वर का पुत्र है तथा उसने अपनी कलीसिया को अपने लोहू से मोल लिया है। (प्रेरितों 20:28; इफि. 5:25)। आज बहुत से लोग कहते हैं कि कलीसिया का प्रचार मत करो, परन्तु बात तो यह है कि यीशु ने अपनी कलीसिया को बनाया था (मत्ती 16:18) और इसलिये यदि हम उसके बारे में बता रहे हैं तो उसकी कलीसिया के बारे में भी बताना आवश्यक है।

आज बहुत से लोग उद्धार की योजना का मज़ाक उड़ाते हैं। बहुत से कहते है कि बपतिस्मा लेना आवश्यक नहीं है परन्तु यीशु ने कहा था कि उसमें विश्वास लाकर तथा बपतिस्मा लेकर उद्धार प्राप्त किया जा सकता है। (मरकुस 16:16) उद्धार के लिये अपने पुराने पापी जीवन से मन फिराना भी आवश्यक है (लूका 13:3; 5)। यीशु का अंगीकार करना भी आवश्यक है (मत्ती 10:32-33) और पानी में बपतिस्मा लेना भी। (प्रेरितों 2:38)। आज यदि आप सुसमाचार का कार्य कर रहे हैं तो उद्धार की योजना का भी प्रचार करे। खोजे ने जब यीशु के बारे में

सुना तो उसने बपतिस्मा लेने की इच्छा ज़ाहिर की थी और जल में बपतिस्मा लिया (प्रेरितों 8:36)। अब फिलिपुस प्रचारक ने उसे बपतिस्मे के विषय में बताया होगा तभी उसने तुरन्त बपतिस्मा लिया। आज बहुत से प्रचारक पूरा सुसमाचार नहीं सुनाते, केवल आधा प्रचार करते हैं। वचन का प्रचार करने का अर्थ है लोगों को बपतिस्में के विषय में बतायें।

कई प्रचारक कहते तो हैं कि हम सत्य का प्रचार कर रहे परन्तु उनके प्रचार में खरापन नहीं है। आज हमें नये नियम के सच्चे बीज को बोना है। (लूका 8:11)। बहुत से प्रचारक अपनी बाइबल का अध्ययन नहीं करते तथा वे बहुत सारी बाइबल की सच्चाईयों से अंजान है। बहुत से अराधना के बारे में नहीं जानते कि नये नियम अनुसार कैसे अराधना होनी चाहिए।

बड़े दु:ख की बात है कि आज हम अपनी अराधना में नये नियम की कलीसिया तथा बपतिस्मा और प्रभु के विषय में प्रचार नहीं करते। आज हम यह प्रचार करना भी भूल गये है कि मसीह कि कलीसिया में बाजे क्यों नहीं बजाये जाते। प्रचारकों को यह भी बताना चाहिए कि जो सदस्य मृत्यु तक विश्वास योग्य रहेंगे उन्हें ही जीवन का मुकुट मिलेगा। (प्रकाशित 2:10)। एक प्रचारक को अपने जीवन को इस प्रकार से रखना चाहिए ताकि उस पर कोई उंगली न उठाये। क्योंकि आप एक प्रचारक है इसलिये आपकी जिम्मेदारी कलीसिया के प्रति महत्वपूर्ण है। प्रेरित पौलुस मसीही भाईयों को लिखते हुए कहता है, ''सो क्या जो तू औरों को सिखाता है, अपने आपको नहीं सिखाता? क्या तू जो चोरी न करने का उपदेश देता है, आप ही चोरी करता है? तू जो कहता है, व्यभिचार न करना; क्या आप ही व्यभिचार करता है? तू जो मूर्तियों से घृणा करता है, क्या आप ही मन्दिरों को लूटता है? तू जो व्यवस्था न मानकर, परमेश्वर का अनादर करता है? क्योंकि तुम्हारे कारण अन्य जातियों में परमेश्वर के नाम की निंदा की जाती है, जैसा लिखा भी है (रोमियों 2:21-24)। एक प्रचारक को दूसरों के सामने अच्छा नमूना बनना चाहिए। (1 तीमु. 4:12)।

परमेश्वर चाहता है कि यदि प्रचारकों को मुसीबतों से भी गुजरना पड़े तो वे प्रचार करना न छोड़े। (2 कुरि. 11 अध्याय) पौलुस को अपने जीवन में कई कठिनाईयों से गुजरना पड़ा था। पतरस 2:20-21 क्योंकि यदि तुमने अपराध करके घूंसे खाए और धीरज धरा तो उसमें क्या बढ़ाई की बात पर यदि भला करके दु:ख उठाते हो तो यह परमेश्वर को भाता है। (1 पतरस 4:16)।

जो युवा अच्छे प्रचारक बनना चाहते हैं इन्हें अपने आप को इसके लिये तैयार करना चाहिए। तीमुथियुस एक युवा प्रचारक कहता है, ''कोई तेरी जवानी को तुच्छ न जाने पर वचन और चाल-चलन और प्रेम और विश्वास और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा।'' (1 तीमु. 4:12)। जो युवा ट्रेनिंग के लिये जाते हैं उन्हें सबसे पहिले अपने आप को मानसिक रूप से दृण करना चाहिए। क्योंकि वे एक ऐसे कार्य की ट्रेनिंग लेने जा रहे हैं जो बहुत ही सीरियस है। कई युवा ट्रेनिंग लेने के पश्चात भी नये नियम की शिक्षाओं से अंजान रहते हैं। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि अपने जीवन को पवित्र और साफ रखिये तथा नशीले

पदार्थ का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। बाइबल कहती है आपका जीवन परमेश्वर का मन्दिर है। (कुरि. 6:18-19)।

प्रचार करना एक बहुत अच्छा कार्य है और यदि आप प्रचार करना चाहते हैं तो यीशु और उसके सुसमाचार का प्रचार कीजिये (मत्ती 28:18-19; मरकुस 16:15-16)। एक और बात जो प्रेरित पौलुस युवाओं से कहता है, और सब प्रचारकों से कहता है कि, ''ऐसा समय आयेगा, कि लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे, पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुतेरे उपदेशक बटोर लेगें। और अपने कान सत्य से फेरकर कथा कहानियों पर लगाएंगे। पर तू सब बातों में सावधान रह, दुःख उठा, सुसमाचार प्रचार का कार्य कर और अपनी सेवा को पूरा कर।'' (2 तीमु. 4:3-5)।

इसलिये यदि आप एक प्रचारक है तो अपनी जिम्मेवारी को याद रखें। याद रखें इन शब्दों को, प्रेरित कहता है, ''और प्रचारक बिना क्योंकर सुनें? और यदि भेजे न जाएं, तो क्योंकर प्रचार करें? जैसा लिखा है, कि उन के पांव क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं।'' (रोमियों 10:15)।

मसीह का आनन्द

सनी डेविड

मित्रो, जिस पुस्तक, को हम बाइबल कहते हैं, सचमुच में बड़ी ही महत्वपूर्ण और अदभुत पुस्तक है। महत्वपूर्ण यह किताब इसलिये है, क्योंकि इस पुस्तक में जिन बातों को लिखा गया है वे सभी बातें परमेश्वर की इच्छा से और उसी की प्रेरणा से लिखी गई हैं। इसलिये, बाइबल मनुष्यों के लिये परमेश्वर की इच्छा का संदेश है। और यह पुस्तक अदभुत इसलिये है क्योंकि इसे लिखवाने के लिये परमेश्वर ने चालिस अलग-अलग लोगों को इस्तेमाल किया था, और लगभग पन्द्रह सौ साल इस किताब को लिखने में लगे थे। और आज केवल यही एक पुस्तक है जो संसार की लगभग सभी भाषाओं में उपलबद्ध है; और सिर्फ यही एक ऐसी किताब है, जो हर एक साल सबसे ज्यादा मात्रा में छापी जाती है, खरीदी जाती है, और पढ़ी जाती है। एक और खास बात हम यह देखते हैं, इस पुस्तक के बारे में, कि एक किताब होते हुए भी इसमें छियासठ अलग-अलग किताबें हैं, और उन सब किताबों के अलग-अलग नाम हैं।

बाइबल में पाई जाने वाली इन पुस्तकों में से एक पुस्तक का नाम है ''इब्रानियों के नाम पत्री।'' अर्थात यह पत्री परमेश्वर ने उन लोगों के लिये लिखवाई थी, जो इब्रानी भाषा बोलने वाले मसीह के अनुयायी थे। इस पुस्तक के ग्यारहवें अध्याय में बहुतेरे ऐसे-ऐसे लोगों के बारे में लिखा हुआ है, जिन्होंने परमेश्वर में अपने पक्के विश्वास के कारण उसकी हर एक आज्ञा का पालन किया था; और चाहे उन्हें कुछ भी खोना और त्यागना पड़ा था, उन्होंने सब कुछ परमेश्वर

में अपने विश्वास के कारण सह लिया था। इसी बात को ध्यान में रखते हुए, इस पुस्तक के बारहवें अध्याय में लेखक कहता है, ''इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए हैं, तो आओ, हर एक रोकने वाली वस्तु, और उलझाने वाले पाप को दूर करके वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिंता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। इसलिये उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया, कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो।'' (इब्रानियों 12:1-3)।

यहां, इस समय, मैं आपके सामने इस बात को रखना चाहता हूं, और बाइबल कहती है, कि यीशु के सामने एक विशेष आनन्द था, एक ऐसा विशाल आनन्द था, जिसे ध्यान में रखकर उसने क्रूस की मृत्यु को भी अपने गले से लगा लिया था। अब, जब हम क्रूस की मृत्यु पर ध्यान करते हैं, तो हम यह देखते हैं, कि क्रूस की मृत्यु से भयानक और कोई मृत्यु नहीं हो सकती। क्योंकि क्रूस के ऊपर लटकाकर मारने से पहले रोमी लोग, दोषी व्यक्ति को भूखा और प्यासा रखते थे। और उसे कोड़ों से पीटा जाता था। फिर, उसे क्रूस के ऊपर लिटाकर क्रूस के साथ उसके हाथ-पांव कीलों के साथ ठोके जाते थे; और उसे क्रूस के साथ बांधकर उस क्रूस को खड़ा किया जाता था। तब क्रूस का निचला हिस्सा जमीन में गाड़ दिया जाता था। और मनुष्य को उस क्रूस के ऊपर मरने के लिये छोड़ दिया जाता था।

प्रत्यक्ष ही है, कि जिस किसी भी व्यक्ति को दोषी ठहराया जाकर क्रूस की मृत्यु का दण्ड दिया जाता था, वह उस की कल्पना तक से कांप उठता होगा। पर यीशु मसीह के बारे में बाइबल में लिखा है कि, उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिंता न करके, उसने क्रूस का दुख सहा, जी हां, लज्जा की कुछ चिंता न करके। जिस मनुष्य को क्रूस पर चढ़ाया जाता था, उसका बड़ा निरादर किया जाता था, उसका सब लोग उपहास उड़ाते थे। क्योंकि जिसे क्रूस पर चढ़ाया जाता था वह एक बहुत बड़ा अपराधी होता था। वह एक डाकू और हत्यारा और देशद्रोही होता था। उसे सबके सामने थप्पड़ मारे जाते थे; उसके मुंह पर थूका जाता था; उसे लोग तरह-तरह की गंदी बातें कहते थे। और उसे निरादर करते थे।

पर यीशु मसीह का दोष क्या था? उसे क्यों क्रूस पर चढ़ाया गया था? वही बाइबल जो हमें यह बताती है, कि वह क्रूस पर चढ़ाकर मारा गया था, यह हम से यह भी कहती है, कि वह जमीन पर हम सब की ही तरह सब बातों में परखा तो गया था, पर उसने कभी भी कोई पाप नहीं किया था। (इब्रानियों 4:15)। और एक और जगह इस प्रकार लिखा हुआ है, कि न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था। (1 पतरस 2:22, 23)।

तो फिर उसे क्रूस पर क्यों चढ़ाया गया था? जबकि वह निरापराध था, और जबकि उसमें कोई दोष नहीं था। मित्रो, वह क्रूस पर इसलिये चढ़ाया गया था, क्योंकि उसके सामने ''एक आनन्द'' रखा गया था। और अपने उसी आनन्द को पूरा करने के लिये वह क्रूस पर चढ़ गया था। बाइबल को पढ़कर हम यह सीखते हैं, कि यीशु को पकड़कर उसे क्रूस पर चढ़ाने का षडयंत्र तो उसके शत्रुओं ने रचा था। पर इस सारी योजना के पीछे वास्तव में हाथ परमेश्वर का था। क्योंकि उसी ने स्वर्ग से अपने वचन को पृथ्वी पर भेजा था। उसी ने उन लोगों का इस्तेमाल किया था, कि वे लोग यीशु को पकड़कर उसे लज्जित करें और उसे एक अपराधी की तरह क्रूस के ऊपर लटकाकर मारें। क्योंकि, इस प्रकार परमेश्वर सारे जगत के सब पापों का प्रायश्चित करके, पृथ्वी पर हर एक इंसान को पाप से मुक्ति पाने का वरदान देना चाहता था। और परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह जो सारी मानवता के पापों का दण्ड पाने के लिये क्रूस पर लटकाकर मारा गया था, वह यह बात ब-खूबी जानता था, कि क्रूस पर उसकी मृत्यु के बाद इसका नतीजा क्या होगा। वह जानता था कि उसकी मौत जमीन पर हर एक इंसान के लिये जिंदगी का पैगाम होगी। उसे मालूम था, उसकी मृत्यु के बाद जगत के सब लोगों के पापों का प्रायश्चित हो जाएगा, और इस प्रकार हर एक इंसान को उसके द्वारा पाप से मुक्ति पाकर स्वर्ग में हमेशा का जीवन पाने का अधिकार मिल जायेगा। और इसीलिये वह क्रूस के ऊपर एक खुशी को देख रहा था। वास्तव में, बाइबल तो हमें यह बताती है, कि वह उस समय का इंतिजार बड़ी ही बेताबी से कर रहा था। (यूहन्ना 12:23, 24)। और, जब वह समय आया था तो उसने उस आनन्द के लिये, जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिंता न करके क्रूस की मृत्यु को गले लगा लिया था।

क्या आप अपने परिवार से प्रेम करते हैं? क्या आप अपने परिवार से इतना प्रेम करते हैं कि अपने सारे परिवार की जान बचाने के लिये आप अपनी जान को भी दांव पर लगा देंगे? मित्रो, परमेश्वर हम सबसे ऐसा विशाल और ऐसा महान प्रेम करता है, कि उसने यीशु मसीह में होकर अपने आप को हमारे लिये बलिदान कर दिया था। उसने हमारे पापों का दण्ड अपने ऊपर उठा लिया था। उसने मौत चख ली, ताकि हमें जिंदगी मिल जाए। वह हमारे लिये पाप बन गया, ताकि हम पवित्र बन जाएं।

पर क्या आज आप इस बात को मानकर, और अपने पापों से मन फिराकर, उसके पास आने को तैयार हैं? बाइबल में लिखा है, कि यदि आप यीशु मसीह में अपने सारे मन से विश्वास लाएंगे और अपने पापों की क्षमा पाने के लिये बपतिस्मा लेकर उसे पहन लेंगे, तो उसमें आप एक नए इंसान बन जाएंगे। क्या वह वास्तव में सत्य-सुसमाचार नहीं है? क्या इससे बड़ी कोई और खुशी की बात हो सकती है?

बाइबल के नए नियम में से पढ़िए- 1 यूहन्ना 4:10; 2 कुरिन्थियों 4+17; गलतियों 3:27; प्रेरितों 2:38; 8:35-39; 22:16।

हमें किसकी उपासना करनी चाहिए

जे.सी. चोट

जगत की सृष्टि से लेकर मनुष्य ने प्रत्येक उस वस्तु की उपासना की है जो सूरज के नीचे पाई जाती है, और स्वयं सूर्य को भी मनुष्य ने पूजा है। संसार में लाखों देवी तथा देवता है। उनके भक्तों में अनेक भव्य मन्दिरों को बनवाया है। तौ भी अधिकांश लोग अपने धर्मों से अप्रसन्न हैं। क्यों? क्या बुराई है?

इसमें बुराई यह है कि अब तक भी असंख्य लोग ऐसे हैं जिनका विश्वास एक मात्र सच्चे वा जीवते परमेश्वर में नहीं है। यीशु मसीह ने उनका वर्णन करके यूं कहा था, ''परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।'' (यूहन्ना 4:24)। सो मनुष्य को परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए। जब मनुष्य इस बात को सीख लेगा और उसी की उपासना करेगा केवल तभी उसे वह आत्मिक शांति वा चैन प्राप्त हो सकेगा जिसकी खोज में वह रहता है।

इस छोटे से पाठ में हम इस बात को देखना चाहते हैं कि परमेश्वर कौन है और हमें क्यों उसकी उपासना करनी चाहिए?

1. परमेश्वर सब वस्तुओं का बनाने वाला है। ''आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।'' (उत्पत्ति 1:1)। यहां कोई तर्क करके कदाचित कहे कि यह बात तो बाइबल में लिखी है; परन्तु इस बात का क्या प्रमाण है? अपने चारों ओर उन सब वस्तुओं को देखिए जिन्हें परमेश्वर ने बनाया है। पृथ्वी तथा पृथ्वी पर की सारी वस्तुएं परमेश्वर के विद्यमान होने का एक बहुत बड़ा प्रमाण है। बिना किसी वस्तु के कोई वस्तु नहीं बन सकती, इसलिये यदि कुछ है तो उसे किसी ने बनाया है। दाऊद कहता है, ''आकाश ईश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उनकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है।'' (भजन 19:1)। इस बात का विरोध कौन कर सकता है? इसका वर्णन कौन करेगा?

परमेश्वर ने मनुष्य अर्थात पुरुष तथा स्त्री को अपने स्वरूप पर बनाया था। ''फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता पर बनाए; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों और घरेलू पशुओं और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखे। तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।'' (उत्पत्ति 1:26, 27)। और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया।'' (उत्पत्ति 2:7)।

2. परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को पाप से मनुष्य का उद्धार करने को भेजा था।

प्रभु के आने के उद्देश्य के संबंध में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, ''क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।'' (यूहन्ना 3:16, 17)। पौलुस

लिखकर कहता है, ''परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।'' (रोमियों 5:8)। फिर वह कहता है, ''वह हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर को अच्छा लगता है, और भाता भी है। वह यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्धार हो; और वे सत्य को भली भांति पहचान लें।'' (1 तीमुथियुस 2:3, 4)। हमारे उद्धार के संबंध में लिखकर, वह कहता है, ''क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे। (इफिसियों 2:8:9)।

3. परमेश्वर ने हमें सब प्रकार की शारीरिक तथा आत्मिक, आशीष दी हैं।

याकूब लिखकर कहता है, ''क्योंकि हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल-बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।'' (याकूब 1:17)। और पौलुस कहता है, ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है।'' (इफिसियों 1:3)।

4. केवल एक ही सच्चा तथा जीवता परमेश्वर है।

उस एक परमेश्वर का वर्णन करके पौलुस कहता है, और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर, और सब के मध्य में, और सब में है। (इफिसियों 4:6)। और फिर वह कहता है, ''क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है।'' (1 तीमुथियुस 2:5)।

5. परमेश्वर आत्मा है।

इस बात को हमने पहले ही यूहन्ना 4:24 में देखा है, जहां बड़ी ही स्पष्टता से बताया गया है कि परमेश्वर आत्मा है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर मांस और लोहू नहीं है। वह शारीरिक या नाशमान नहीं है। वह भौतिक नहीं है। इसलिये, जब हम इस बात को समझ लेते है कि वह आत्मा है, तो परमेश्वर के विषय में हमारा उचित दृष्टिकोण होगा क्योंकि तब हम परमेश्वर को मनुष्य के स्तर पर नहीं परन्तु एक अलग और ऊंचे स्तर पर देखेंगे।

6. परमेश्वर प्रेम है।

यूहन्ना लिखकर कहता है, ''जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, वह इससे प्रकट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलोते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इसमें नहीं, कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें हैं, कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा। हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया, तो हमको भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।'' (1 यूहन्ना 4:8.11)। सो वह कहता है, कि यदि हम प्रेम नहीं रखते तो हम परमेश्वर को नहीं जानते क्योंकि परमेश्वर ने अपने आप को प्रेम से ही प्रगट किया है।

7. परमेश्वर जीवता है।

पतरस ने मसीह को जीवते परमेश्वर का पुत्र कहकर अंगीकार किया था। (मत्ती 16:16)। कलीसिया को सम्बोधित करके पौलुस कहता है कि वह जीवते परमेश्वर की कलीसिया है। (1 तीमुथियुस 3:15) फिर वह उन लोगों के विषय में बताता है जो मूरतों से फिरे थे ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करें। (1 थिस्सलुनीकियों 1:9)। कुछ लोगों का मत है कि परमेश्वर मर चुका है, परन्तु जो लोग ऐसा कहते हैं वे स्वयं आत्मिक रूप से मरे हुए हैं। परमेश्वर जीवता है। मसीह यीशु ने शिक्षा देकर कहा था, ''वह तो मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवतों का परमेश्वर है।'' (मत्ती 22:23)।

8. परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।

जब यीशु ने लोगों से इस विषय पर बात की थी कि किस का उद्धार हो सकता है, तो उसने कहा था, ''मनुष्य से तो यह नहीं हो सकता है परन्तु परमेश्वर से हो सकता।'' (मत्ती 19:26)।

9. परमेश्वर को छोड़कर और कोई उत्तम नहीं है।

''यीशु ने उससे कहा, तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं केवल एक, अर्थात परमेश्वर।'' (मरकुस 10:18)।

10. परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा है।

यूहन्ना ने लिखकर कहा था, ''परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रकट किया है। (यूहन्ना 1:18)।

इस संबंध में हम आगे और भी कई एक बातें देख सकते हैं, अर्थात परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता (प्रेरितों 10:34, 35), और उसे जगत की उत्पत्ति से ही सब बातों का ज्ञान है (प्रेरितों 15:18), और वह एक दिन यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा (रोमियों 2:16), और वह अनन्त जीवन दे सकता है (1 यूहन्ना 5:11)।

जिस परमेश्वर के बारे में हम देख रहे हैं वह सब कुछ जानता है, वह सब कुछ देखता है, और सुनता है, वह एक ही समय में सब जगह विद्यमान है, वह सर्वशक्तिमान है तथा उसका न कोई आदि है और न अन्त है। उसकी तुलना किसी के साथ भी नहीं की जा सकती। वह सारी वस्तुओं का सृष्टिकर्त्ता है। केवल वही हमारी उपासना, स्तुति तथा आदर के योग्य है, और केवल उसी की महिमा युगानुयुग तक होती रहेगी।

यद्यपि परमेश्वर हमारी उपासना को चाहता तो है, परन्तु अपनी उपासना करवाने के लिये वह हमारे ऊपर कभी कोई दबाव नहीं डालता किन्तु जो उसकी उपासना करेंगे उन्हें वह उसी प्रकार आशीष भी देगा।

तौभी, वह हर एक तरह की उपासना को स्वीकार नहीं करेगा। परन्तु यदि हम उसकी उपासना करना चाहते हैं, तो वह हमारी इच्छा के अनुसार नहीं पर उसी की इच्छा के अनुसार होनी चाहिए। जिस प्रकार की उपासना की इच्छा वह हमसे रखता है उसे उसने अपने वचन की पुस्तक में प्रकट किया है, और अपने अगले पाठ में हम इसी विषय में देखने जा रहे हैं।

घर में धीरज (सहनशीलता)

(गलातियों 5:22, 23)

कोय रोपर

जब लोग बदलेंगे नहीं तो क्या किया जा सकता है?

यदि पति और पत्नी दोनों मसीही हैं तो उन्हें बाइबल के ढंग से काम करना चाहिए। वह कहेगा, यदि तुम्हें ऐसा लगता है तो मैं बदलने की कोशिश करूंगा, वह कहेगी, यदि आपको लगता है कि यह गलत है, तो मैं दोबारा ऐसा नहीं करूंगी। परन्तु जब बाइबल का ढंग काम न करे और झगड़े का कारण वैसे ही बना रहे तो? अलग-अलग ढंगों का इस्तेमाल किया गया है।

शिकायत करना? हम इसे 99 प्रतिशत मान सकते हैं कि दोष निकालना किसी प्रकार काम नहीं करता। पत्नी को लग सकता है कि यदि मैं अपने पति को याद दिलाती रहूं तो अन्त में वह बदल जाएगा। वहीं पति सोच रहा हो सकता है, जब तक यह इस बारे में शिकायत करती रहती है तब तक मैं वैसा नहीं करूंगा जैसा वह चाह रही है। (पत्नी को लगा था कि वह सुझाव दे रही है जबकि पति को लग सकता है कि वह दोष निकाल रही है।)

तलाक? यदि समस्या का किसी प्रकार से समाधान नहीं हो सकता और झगड़े बरकरार रहते हैं तो क्या दम्पत्ति को विवाह को छोड़ देना चाहिए? कुछ समस्याएं होती हैं जो सचमुच लगता है कि उनका समाधान नहीं हो सकता।

मैं एक आदमी को जानता था, जो अधिकतर समय-समय पर अपनी पत्नी के साथ बिल्कुल अनादर भरे ढंग से व्यवहार करता था। वह उसका मजाक उड़ाता और उस पर ताने कसता था। उस आदमी को कोई चीज बदल नहीं पाई। उसकी पत्नी को क्या करना चाहिए था? क्या उसे तलाक ले लेना चाहिए था? कई स्त्रियां और पुरुष सोचते हैं कि उनका विवाह शराबी सा हो गया है। वे उसका क्या कर सकते हैं, क्या शराबी पति या पत्नी से तलाक ले लें? कुछ पुरुष और स्त्रियां पैसे के मामले में बिल्कुल गैर जिम्मेदार लगते हैं; जिस कारण उनके परिवारों में आर्थिक तंगी बनी रहती हैं। ऐसी स्थिति में क्या किया जाना चाहिए? क्या इसका उत्तर तलाक है? बेवफाई का क्या हल है? बाइबल बताती हैं कि अनैतिकता के मामले में, तलाक की अनुमति है, परन्तु आवश्यकता नहीं (मत्ती 19:9)। क्या केवल तलाक ही उत्तर या सबसे बढ़िया उत्तर है? मानसिक रोग होने पर क्या हो सकता है? यदि एक साथी मानसिक रूप से रोगी है, तो क्या दूसरे को विवाह को खत्म कर देना चाहिए?

यह ऐसे सवाल हैं जिनका उत्तर आसान नहीं है। एक पति या पत्नी अपने साथी की गलती को बर्दाशत करने का निर्णय लेकर स्पष्टता उसे पाप करने के योग्य बना सकता या सकती है। कई बार यह हकीकत कि एक साथी वेवफा है विशेषकर यदि वह लगातार बेवफाई कर रहा या कर रही है उसके साथ रहने को असंभव बना देता है। एक साथी शारीरिक रूप में गलत हो सकता है, निश्चय ही परमेश्वर गलत साथी के साथ रहकर किसी को अपना जीवन खतरे में डालने की उम्मीद नहीं करता। ऐसे मामलों में

अपनी शारीरिक या मानसिक या आत्मिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए मसीही पत्नी या पति को उस साथी को छोड़ने को विवश होना पड़ सकता है। तब भी मसीही पति या पत्नी को यह समझाना आवश्यक है कि तलाक पहला और सबसे बढ़िया समाधान नहीं है। तलाक हर हाल में पूरा होगा; कुछ मामलों में यह आवश्यक हो सकता है, पर यह कभी भी सकारात्मक भलाई में नहीं होता।

विवाह के साथी के बदलने से इंकार करने के यदि शिकायत करना या तलाक लेना दोनों में से कोई भी अच्छा समाधान न दे तो क्या होगा? यह प्रश्न हमें वहीं ले जाता है जहां से हम ने आरंभ किया था।

धीरज या सहनशीलता की आवश्यकता हो सकती है

जब वैवाहिक झगड़े किसी और बात से निपटें तो धीरज आवश्यक है। धीरज क्या है?

धीरज का अर्थ

पौलूस ने यूनानी शब्द के रूपों का जो गलातियों 5:22 में इन अवधारणाओं को व्यक्त करते हैं कई बार इस्तेमाल किया और इसका अनुवाद आमतौर पर सहनशीलता हुआ है। इसका अक्षरश: अर्थ प्राकृतिक है। इस शब्द को उत्तेजना का सामना होने पर आत्मसंयम का गुण जो जल्दबाजी में बदला नहीं लेता या जल्दी से दण्ड नहीं देता के लिए हुआ है। इसका संबंध एक और शब्द से है जिसका अनुवाद धीरज हुआ है और यह सहनशक्ति या धैर्य का सुझाव देता है, विशेषकर परमेश्वर से दूर होने का दबाव होने पर इसका संबंध है जिसका अनुवाद आमतौर पर विरोधी लोगों के संबंध में धैर्य दिखाता है।

नये नियम के अनुसार (1) परमेश्वर धीरजवंत या सहनीशील है। रोमियों 2:4 परमेश्वर की कृपा और सहनशीलता और धीरज की बात करता है। 1 पतरस 3:20; 2 पतरस 3:9,15, फिर हम पढ़ते हैं कि (2) मसीही धीरजवंत या सहनशील है। पौलुस ने कहा कि उस पर दया हुई ताकि मसीह पौलूस के मन परिवर्तन में अपनी पूरी सहनशीलता को दिखा सके। (1 तीमुथियुस 1:16)। (3) इसलिए मसीही लोग धीरजवन्त या सहनशील होने चाहिए। अन्य बातों की तरह इस बात में भी हमें परमेश्वर का अनुसरण करने वाले (इफिसियों 5:1) और मसीह का अनुकरण करने वाले होना चाहिए (1 कुरिन्थियों 11:1; 1 पतरस 2:21)। इसलिए इफिसियों 4:1, 2 और कुलुस्सियों 3:12, 13 दोनों मसीही लोगों से धीरजवंत या सहनशील होने को कहते हैं। इफिसियों 4:1,2 में धीरज को दीनता और नम्रता के साथ और एक-दूसरे की सह लेने के साथ जोड़ा गया है। कुलुस्सियों 3:12-14 में धीरज को करूणा के साथ भलाई और दीनता और नम्रता के साथ, एक-दूसरे की सह लेने के साथ और एक-दूसरे को क्षमा और प्रेम करने से जोड़ा गया हैं।

इस सारी जानकारी को इक्ट्ठा करने पर हमें यह सीखने को मिलता है कि वचन उत्तेजना के समय आत्मसंयम का सुझाव देता है, जो हमें जल्दीबाजी में बदला लेने या दण्ड देने से रोके। यह विरोधी लोगों के संबंध में धीरज रखना है। यह क्रोध का उल्टा है। यह दया, सहनशीलता क्षमा और प्रेम से जुड़ा है।

यदि हम धीरजवंत हैं और विवाह में इस गुण को दिखाते हैं तो हम जल्दी में परेशान नहीं होंगे। हम बदला नहीं लेंगे या दण्ड नहीं देंगे। हम अपने साथी से प्रेम करेंगे, चाहे वे हमारे प्रति विरोध ही रखते हो। मसीही लोग अपनी पत्नियों के प्रति दया और

अनुग्रह दिखाएंगे। पत्नियां अपने पतियों को उनकी कमजोरी या उनकी परेशानियों में सहने को या बर्दाशत करने को तैयार होंगे। परिवारिक लोग क्षमा करने वाले होंगे। झगड़े होने और यह लगने पर कि किसी से सहायता नहीं मिलेगी, धीरजवंत या सहनशील होना जिसमें प्रेम करने वाले, अनुग्रहकारी, दयालु, सहनशील और क्षमा करने वाले ही होंगे।

तीन प्रकार की मृत्यु

जॉन स्टेसी

मृत्यु एक ऐसा शब्द है जिसे जब हम अपने साथ जोड़ते हैं तो हमें यह पराया लगने लगता है, परन्तु है यह एक सच्चाई, जिसका सामना संसार के हर प्राणी को करना पड़ेगा। बाइबल बड़ी स्पष्टता से बताती है कि मृत्यु तीन प्रकार की है।

इस संबंध में सबसे पहले हम देखते हैं कि सबके लिए शारीरिक मृत्यु आवश्यक है। पवित्र बाइबल में शारीरिक मृत्यु को इस प्रकार बताया गया है कि मृत्यु के समय आत्मा शरीर से अलग हो जाती है। याकूब 2:26 बताता है, "अत: जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है, वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।" इब्रानियों 9:27 बताता है, मनुष्य के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।" 2 कुरिन्थियों 4:16 में पौलुस कहता है, "हमारा बाहरी मनुष्य तो नष्ट होता जाता है।"

सो बेशक हम जीवित हैं, परन्तु शारीरिक रूप में हम घटते जाते हैं। यह सब देखकर हमें एक बात की समझ आनी चाहिए कि परमेश्वर के बिना हम सब लाचार और आशाहीन हो जाते हैं, परन्तु यह एक सच्चाई है कि सच्चे मसीही को मृत्यु का भय नहीं होता। क्यों? मसीही लोग मृत्यु से इसलिए नहीं डरते क्योंकि वे पाप के लिए मर चुके हैं।

यह दूसरी मृत्यु है। हम सब को यह समझ होनी चाहिए कि पाप मनुष्य को परमेश्वर से दूर करता है, जो मनुष्य की आत्मिक मृत्यु का कारण बनता है। यशायाह 59:2 बताता है, परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता। रोमियों 6:23 में पौलुस कहता है, "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।"

परन्तु फिर भी हमें बचाने के लिए परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को भेज दिया, ताकि उसमें होकर हम सब पाप के लिए मर जाएं। 1 पतरस 2:24 बताता है, वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिए मरकर धार्मिकता के लिए जीवन बिताएं। उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए। परन्तु पाप के लिए हम कैसे मर सकते हैं? हम पाप से तब मरते हैं जब हम पाप से मन फिराकर मसीह यीशु के सुसमाचार को ग्रहण करते हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक में हमें बहुत से उदाहरण मिलते हैं जिनसे हमें समझ आता है कि लोगों ने कब मसीह के सुसमाचार को कैसे माना था।

और अन्त में हम देखेंगे कि यह एक आत्मिक मृत्यु है। आत्मिक मृत्यु का अर्थ है कि परमेश्वर से अलग होकर रहना। आत्मिक मृत्यु को बाइबल कई प्रकार से दिखाती है। मत्ती 10:28 में यीशु ने कहा था, जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा

को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है।

परमेश्वर प्रेम है

एच. ए. डिक्सन

सामरी स्त्री के पास यीशु ने घोषणा की कि, परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई के भजन करें (यूहन्ना 4:24)। अपने इस कथन में मसीह ने इस बात की पुष्टि की थी कि परमेश्वर एक व्यक्ति है। वह आत्मा है अर्थात एक वास्तविक जीव है, परन्तु पूरी तरह से निराकार है। वह आत्मा है अर्थात उसके बारे में कुछ भी स्पर्श योग्य नहीं है। उसे छुआ नहीं जा सकता और न ही उसे इन शारीरिक आंखों से देखा जा सकता है। वह आत्मा है, परन्तु वास्तविक है। वह एक व्यक्तिगत परमेश्वर है।

1 यूहन्ना 1:5 में प्रेरित यूहन्ना ने कहा है कि ''परमेश्वर ज्योति है, और उसमें कुछ भी अंधकार नहीं।'' पवित्र आत्मा से प्रेरणा पाए इस लेखक ने इस बात की पुष्टि की है कि परमेश्वर एक बुद्धिमान जीवन है। वह प्रकाश नहीं बल्कि ज्योति है। उसका स्वभाव ही ज्योति है। बौद्धिक पक्ष से यह ईश्वरीय सार है। ज्योति परमेश्वर का गुण नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर है। याकूब ने यह स्पष्ट करते हुए ऐलान किया कि परमेश्वर ज्योतियों का पिता है (याकूब 1:17)। पौलुस ने कहा कि वह ज्योति में रहता है (1 तीमुथियुस 6:16)।

1 यूहन्ना 4:8 में हमें परमेश्वर के स्वभाव संबंधी एक गहरा कथन मिलता है, जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। ज्योति की तरह ही, प्रेम परमेश्वर का केवल गुण ही नहीं बल्कि उसका स्वभाव भी है। जिस प्रकार परमेश्वर ज्योति है की अभिव्यक्ति से परमेश्वर का बौद्धिक स्वभाव संक्षिप्त हो जाता है, उसी प्रकार परमेश्वर प्रेम है यह भी उसके नैतिक स्वभाव को संक्षेप में बताता है। जो कोई सुन्दरता, सामर्थ और न्याय के परमेश्वर के गुणों का ध्यान नहीं करता है उसने परमेश्वर के ज्ञान को सीमित कर दिया है, चाहे उसे उसके बारे में बहुत सी बातों का ज्ञान क्यों न हो। उसी प्रकार, जिसे प्रेम की अवधारणा का ज्ञान नहीं है, वह परमेश्वर को जान ही नहीं सकता। प्रेम परमेश्वर का है, क्योंकि वह प्रेम है। फिर तो, परमेश्वर आत्मा है, अर्थात एक व्यक्तिगत जीव, वह ज्योति, अर्थात एक बौद्धिक जीव है; और वह प्रेम अर्थात एक नैतिक जीव है।

यूहन्ना ने मसीही लोगों के नाम लिखी अपनी पहली पत्री में एक दूसरे के व्यवहारों के संबंध में पाई जाने वाली गलत धारणाओं को सुधारने के लिए, थोड़ा सा लिखा था। इस पुस्तक का एक उद्देश्य भाईचारे के प्रेम का महत्व बताना है। 1 यूहन्ना 4:7,8 में हम पढ़ते हैं, हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है, और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।

एक दूसरे से प्रेम की बात मसीही लोगों से इस प्रकार हुड़ी हुई है कि किसी के परमेश्वर की संतान होने का यही प्रमाण है कि वह प्रेम है। जो कोई प्रेम रखता है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है। बिना प्रेम के, परमेश्वर का पुत्र होने का दावा नहीं किया जा सकता। जैसे एक बच्चे में अपने सांसारिक पिता का स्वभाव होता है, उसी प्रकार परमेश्वर की आत्मिक संतान में अपने आत्मिक पिता का स्वभाव होता हैं जो पिता प्रेम में सहभागी हो। प्रेम वैसे ही उसके जीव का एक भाग होना चाहिए जैसे यह परमेश्वर का एक भाग है।

परमेश्वर का प्रेम मनुष्य को दिखाया गया

मनुष्य का दिमाग परमेश्वर को पूरी तरह समझने में असफल रहा है। उसकी आंखें परमेश्वर को देख नहीं सकती। उसके हाथ परमेश्वर को छू नहीं सकते। उसका दिमाग परमेश्वर की खोज नहीं कर सकता। परमेश्वर ने मनुष्य में अपना स्वभाव तथा अपने गुण प्रकट कर दिए हैं, फिर भी उनमें से एक को भी नाशवान मनुष्य की कलम या शब्दों से समझाया नहीं जा सकता। इस तथ्य से प्रभावित होकर, एक कवि ने कुछ पंक्तियां लिखीं थी। उनका अनुवाद इस प्रकार से है-

अगर हम स्याही से सागर को भर देते,
घास की हर एक पत्ती कलम बन जाती,
संसार चर्मपत्र बन जाता,
और हर मनुष्य लेखक,
तौभी परमेश्वर के प्रेम को लिखते-लिखते,
जो सबसे ऊपर है
सागर सूख जाता;
एक आकाश से दूसरे आकाश तक फैलाने
के बाद भी उस पत्री में
वह पूरा न समा पाता।

नाशवान मनुष्य अनादि परमेश्वर के दिमाग और चरित्र को नहीं पा सकता हैं फिर तो, मनुष्य को परमेश्वर की वास्तविकता तथा स्वभाव को जानने के लिए उसके ईश्वरीय प्रदर्शनों पर ही निर्भर होना पड़ेगा। बिलकुल सही, हम पौलुस से सहमत होकर कह सकते हैं कि उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते है (रोमियों 1:20)। इस कथन में परमेश्वर की ईश्वरीयता तथा सामर्थ की बात है, परन्तु उसके प्रेम के संबंध में भी यही सत्य है। हम उसके प्रेम को देख तो नहीं सकते, परन्तु ईश्वरीय करूणा, दया और मनुष्य पर उसके अनुग्रह के कामों से इसे समझ सकते हैं।

परमेश्वर ने मनुष्य के प्रति अपने प्रेम को सृष्टि के समस्त कार्य में दिखाया है। यशायाह नबी ने कहा था कि परमेश्वर ने मनुष्य को बसने के लिए रचा है (यशायाह 45:18)। इसका अर्थ सही ही निकाला गया है कि परमेश्वर ने आरंभ में संसार को मनुष्य के निवास के लिए बनाया, जिससे वह प्रेम करता था। परमेश्वर मनुष्य के पास आता था, जिसे उसने स्वर्गदूतों से थोड़ा कम बनाया था (इब्रानियों 2:6,7)।

इस निवास में, उस प्रेमी परमेश्वर ने न केवल आदमी के अस्तित्व के लिए जीवन की सभी मूलभूत वस्तुएं ही उपलब्ध करवाई, बल्कि उसने उसके लिए एक सहायक भी बनाई जो उसकी आवश्यकताओं के अनुसार उपयुक्त थी। उसने आदमी को इस सहयोगी के साथ इतने पक्के बंधन में दिया, जिसे लोग पुरुष के लिए अपनी पत्नी का प्रेम कहते हैं। इस नए बंधन से आदमी को अपने प्रियजनों के साथ एक घर मिला, और इससे युगों तक सच्चे प्रेम को बढ़ाने और कायम रखने का आधार मिला। मनुष्य के पास परमेश्वर की सच्ची संतान के घर को भरने से अच्छे प्रेम की परिभाषा नहीं है।

परमेश्वर का प्रेम भौतिक संसार की रचना में दिखाई देता है। उसने मनुष्य को आदर्श परिस्थितियों में अदन की वाटिका में रखा। मनुष्य द्वारा पाप करने और उसे वाटिका से निकालने के बाद भी, परमेश्वर ने मनुष्य के प्रति अपना प्रेम दिखाया। बेशक पृथ्वी श्रापित हो चुकी थी और मनुष्य मेहनत-मजदूरी करने को मजबूर था, परन्तु परमेश्वर ने अनुकूल मौसम दिए और उसे समय के अंत तक बीज बोने तथा उपज लेने का आश्वासन मिला।

समस्याओं की इस दुनिया में, मनुष्य को रास्ता कभी भी अकेले नहीं मिल सकता। समस्याओं के समाधान उसे अपने आप नहीं मिलते। पुन: परमेश्वर ने मनुष्य को निर्देश देकर अपने प्रेम को दिखाया। परमेश्वर ने अपने आपको अलग-अलग संदेशवाहकों के द्वारा प्रकट किया। उसने अंधेरे को छितराने के लिए ज्योति और मनुष्य की अगुआई के लिए परामर्श दिया। वह परामर्श और निर्देश मिलकर पुस्तकों की पुस्तक बन जाते है। बाइबल स्वयं इस तथ्य का प्रमाण है कि परमेश्वर प्रेम है।

प्रेम होने का परमेश्वर का सबसे बड़ा प्रमाण इन तथ्यों से मिलता है कि उसने मनुष्य के पापों के लिए उपाय उपलब्ध करवाया है। यूहन्ना 3:16 बाइबल की सुनहरी आयत के रूप में प्रसिद्ध है। यह बिल्कुल सही है, क्योंकि यह पद परमेश्वर के प्रेम की सीमा का सार है। उसने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि हमारे स्थान पर मरने के लिए अपने पुत्र को दे दिया। यूहन्ना ने कहा है, हमने प्रेम इसी से जाना, कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए (1 यूहन्ना 3:16क) कलवरी के क्रूस पर ही हमें मनुष्य जाति के लिए परमेश्वर के प्रेम का हर कोना स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इसमें हमारे प्राणों के लिए उसकी चिंता की लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई और गहराई दिखाई देती है।

पृथ्वी पर परमेश्वर के परिवार की संगति व आनन्द परमेश्वर के प्रेम का एक और प्रगटीकरण है। यह संगति उन सब लोगों का सौभाग्य है जो परमेश्वर की कलीसिया बनते है। इसमें उसके लोग उसकी सभी आशिषें पाते हैं। उसने कलीसिया से प्रेम किया और इसे संभव बनाने के लिए अपने पुत्र को दे दिया। उस पुत्र ने कलीसिया से प्रेम किया और अपने आपको दे दिया ताकि परमेश्वर की आत्मा के निवास के लिए वह इसे पवित्र तथा शुद्ध बना सके।

परमेश्वर के प्रेम के अंतिम प्रतीक के रूप में हम मृत्यु के बाद जीवन की आशा की और ध्यान दिलाते हैं। यह बात एक प्रेमी पिता की प्रतिज्ञाओं के द्वारा मनुष्य में डाली गई थी, और मनुष्य को धर्मी जीवन बिताने के लिए प्रेरणा देती है। यह विश्वास कि जीवन अनन्तकाल की और केवल एक कदम है, अनन्त महिमा के स्वर्गलोक जाने की इस आशा से देह या मन के कष्टों को सहने तथा जीवन की कठिन परीक्षाओं का सामना करने की सामर्थ मिलती है। यह आशा इस तथ्य का एक और प्रगटावा है कि परमेश्वर ने अपने प्रेम से जीवन तथा भक्ति के संबंध रखने वाली आशिषें उपलब्ध करवा दी हैं।

परमेश्वर के प्रेम को मनुष्य द्वारा ग्रहण करना

परमेश्वर ने अपने प्रेम को मनुष्य द्वारा उसे ग्रहण करने के लिए उसकी ओर उंडेला है। यूहन्ना ने कहा है, हम इसलिए प्रेम करते हैं, कि पहले उसने हमसे प्रेम किया (1 यूहन्ना 4:19)। परमेश्वर से प्रेम करने के लिए, आवश्यक है कि उनसे भी प्रेम करें जो उसे प्रेम करते हैं; लोगों में यह गलतफहमी पाई जाती है कि परमेश्वर के लोगों के प्रति दुर्भावना और शत्रुता रखकर हम परमेश्वर से प्रेम कर सकते हैं। पौलुस प्रेरित की भाषा में, हर एक मसीही को एक दूसरे को अपने से अच्छा (फिलिप्पियों 2:3) समझकर परमेश्वर के लोगों के प्रति अपना प्रेम दिखाना चाहिए।

प्रेम का सेवा में बदलना आवश्यक है। परमेश्वर की नजर में प्रेम से कार्य करने वाला विश्वास ही सच्चा विश्वास है। यीशु ने कहा था, यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे (यूहन्ना 14:15)। इसलिए प्रेम को सेवा से अलग नहीं किया जा सकता और परमेश्वर के लोगों के लिए प्रेम को सेवा द्वारा ही दिखाया जाना चाहिए। हमें लोगों की सेवा करते हुए उनकी आत्माओं से प्रेम के कारण उनके उद्धार की खोज में लगे रहना चाहिए। लोगों की भौतिक आवश्यकताओं से अपने कान और आंखें बंद करके हम आत्मिक भोजन नहीं दे सकते। यीशु भलाई करता गया, और जो लोग वैसा ही प्रेम रखते हैं जैसा यीशु का था, उनके लिए उसके उदाहरण का अनुसरण करना आवश्यक है।

परमेश्वर के प्रेम के चरित्र तथा गुण को 1 कुरिन्थियों 13 के प्रसिद्ध शब्दों में डाला गया है। परमेश्वर का दास घोषणा करते हुए यह कहता है कि–

प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंग्लाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है (1 कुरिन्थियों 13:4–7)। यह पद न केवल प्रेम के चरित्र को दर्शाता है, बल्कि परमेश्वर का भी चित्रण करता है क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। ''प्रेम'' के स्थान पर परमेश्वर शब्द लगा देने पर यह पद काफी पढ़ने योग्य अर्थात अच्छा लगता है–

परमेश्वर धीरजवन्त है, और कृपाल है; परमेश्वर डाह नहीं करता; परमेश्वर अपनी बड़ाई नहीं करता और फूलता नही। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता हैं

परमेश्वर के बालक का स्वभाव तथा चरित्र परमेश्वर जैसा ही होना चाहिए, इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि पवित्र शास्त्र के इस पद में उसमें अपना नाम रखने का गुण होना चाहिए। आइए फिर से इस पद को इस प्रकार पढ़ते हैं–

मसीही धीरजवन्त है, और कृपाल है; मसीही डाह नहीं करता, मसीही अपनी बढ़ाई नहीं करता और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता हैं

अन्त में आइए हम सब अपने आपको वहां रखें और एक बार फिर पढ़ें–

मैं धीरजवन्त हूं, और कृपाल हूं; मैं डाह नहीं करता; मैं अपनी बड़ाई नहीं करता और फूलता नहीं। मैं अनरीति नहीं चलता, मैं अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता हूं। मैं सब बातें सह लेता हूं, सब बातों की प्रीतीति करता हूं, सब बातों की आशा रखता हूं, सब बातों में धीरज धरता हूं।

किसी भी मनुष्य में पूरी तरह से अपने तौर पर ऐसा दावा करने का साहस नहीं होगा, परन्तु यही तो चेले होने की वास्तविक परीक्षा है। क्या हम वास्तव में परमेश्वर को जानते हैं? क्या हम कह सकते हैं कि हम में परमेश्वर का स्वभाव है? उत्तर देते हुए, आइए फिर से याद करें कि उसने कहा कि ''जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है'' (1 यूहन्ना 4:8); यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो (यूहन्ना 13:35)।

पौलुस द्वारा दी गई प्रेम की परिभाषा पर मनन करने पर, हमें मनुष्य के स्वार्थी स्वभाव का ध्यान आता है। हम उसके आत्मनिर्भर होने के विचार में डूबने का स्मरण करते हैं। हम याद करते हैं कि दूसरों की आलोचना करने और अपने आपको धर्मी बताने की ओर उसका कितना ध्यान रहता है। हम याद करते हैं कि कैसे उसे अपने भाई की आंख का तिनका तो दिखता है, परन्तु अपनी आंख का लट्ठा दिखाई नहीं देता (देखिए 7:3, 4)।

क्या हम इस तथ्य को स्पष्ट करने में असफल रहे हैं कि बिना प्रेम के कोई भी सदगुण परमेश्वर के गुण के बराबर नहीं हो सकता? जिस समय परमेश्वर के लोगों को विशेष आश्चर्यकर्म करने की शक्तियां दी जाती थीं, तब भी प्रेम का अभाव होने पर उन

कामों को उसकी नजर में व्यर्थ गिना गया था (1 कुरिन्थियों 13:1, 2)। उन दोनों से परमेश्वर का उद्देश्य पूरा हुआ और उद्देश्य पूरा होने के बाद उन्हें बीच में से उठा लिया गया; अब केवल विश्वास आशा और प्रेम ही रहते है। पौलुस कहता है कि इन में से बड़ा प्रेम है (1 कुरिन्थियों 13:13)। यह वह गुण है जो किसी भी विश्वास तथा आशा को अर्थ और महत्व देता है। इस गुण के होने से हमें पता चलता है कि हम परमेश्वर के हैं या नहीं। इससे हम जानते हैं कि हम सचमुच परमेश्वर की संतान हैं या नहीं। इससे हम जानते हैं कि इस पृथ्वी से जाने के बाद उसकी उपस्थिति में जाने पर हम उसके जैसे होंगे या नहीं।

फिलेमोन (परिचय)

ब्रूस मैक्लार्टी

प्रेरित पौलुस के लेखकों के अन्त में नये नियम में लगभग छुआ हुआ फिलेमौन के नाम पौलुस का छोटा सा पत्र है। केवल पच्चीस छोटी-छोटी आयतों वाली फिलेमोन की पुस्तक को आसानी से नजरअंदाज किया जाता है और आमतौर पर उसकी अनदेखी की जाती है। इस संक्षिप्त पत्री में डॉक्ट्रिन की कोई बड़ी चर्चा नहीं है और याद करने के लिए एक भी विशेष आयत नहीं है। शायद फिलेमोन के बारे में सबसे अधिक पूछा जाने वाला प्रश्न यह है कि इसे बाइबल में रखा ही क्यों गया है? तौभी यह आज भी पवित्र शास्त्र का महत्वपूर्ण भाग बनी हुई है, क्योंकि यह मसीही विश्वास को बेहतरीन ढंग से पेश करती और इसमें उस नाटकीय प्रभाव को जो मसीही विश्वास का यीशु के अनुयायियों पर एक-दूसरे पर होना चाहिए।

इस प्रश्न में कई पत्र अनुत्तरित रहते हैं। फिलेमोन, अफ्फिया और अर्खिप्पुस के बीच क्या संबंध था? उनेसिमुस दास कैसे बना? क्या उनेसिमुस वापस न आने के इरादे से भागा था या उसने केवल पौलुस की सहायता चाही थी। उसको पौलुस कैसे मिला? फिलेमोन और उनेसिमुस के बीच क्या निजी संबंध था? संक्षेप में बहुत कुछ ऐसा है जो हम इस पत्र की पृष्ठभूमि के बारे में नहीं जानते हैं।

परन्तु इस पहेलीनुमा कहानी की आवश्यकता बातें स्पष्ट हैं। फिलेमोन दास का स्वामी था जिसे पौलुस के प्रचार के मसीह में लाया गया था। उनेसिमुस, फिलेमोन का दास था, जो रोम में भाग गया था जहां उसे पौलुस मिला और वहां उसका मन परिवर्तन हुआ था। पौलुस जो उस समय जेल में था ने उनेसिमुस को अपने स्वामी के साथ मेल करने के लिए फिलेमोन के पास वापस भेज दिया। वापसी में उनेसिमुस पौलुस के हाथ का लिखा हुआ पत्र फिलेमोन को देने के लिए ले गया ताकि वह उनेसिमुस के साथ प्रभु में एक भाई के जैसा व्यवहार करे।

प्रेरित, दास का स्वामी, और दास एक नई और कठिन परिस्थिति में थे। उनका यीशु के साथ और इस कारण एक दूसरे के साथ संबंध होने के लिए उन सब के लिए इस नाजुक मामले को एक-दूसरे के साथ बड़ी दीनता और बड़े सम्मान के साथ देखना आवश्यक था। प्रेरित पौलुस के सामने ऐसी ही चुनौती आई जब उसने फिलेमोन के नाम अपने पत्र को लिखा। हम आभारी हो सकते हैं कि आज संसार के अधिकतर भागों में दासता खत्म हो चुकी है परन्तु सच्चे भाइयों और बहनों के रूप में साथी मसीही लोगों के साथ बर्ताव करने का संघर्ष आज भी मसीह के अनुयायियों के रूप में चुनौती बना हुआ है। जब तक यह बात सही रहेगी तब तक फिलेमोन के नाम पौलुस के पत्र की पच्चीस आयतें कलीसिया के बहुत महत्वपूर्ण उद्देश्य को पूरा करती रहेंगी।

लेखक

इस पत्र के पहले शब्द में लेखक अपना परिचय पौलुस के रूप में देता है। उसके इसे लिखने के समय वह मसीह यीशु का कैदी (आयत 1) होने के साथ-साथ बूढ़ा पौलुस भी था (आयत 9)। पत्र का हर संकेत इस निष्कर्ष की ओर ध्यान दिलाता है कि पत्र प्रेरित पौलुस द्वारा अपने ही जीवन के अंतिम वर्षों के दौरान जेल में रहते समय लिखा गया था। चाहे (फरडिलेंड माउल और उन्नीसवीं शताब्दी की क्यूबिनजेन पाठशाला) ने इस विचार को चुनौती दी है, फिलेमोन के पत्र की प्रमाणिकता आज लगभग विश्वव्यापी रूप में मानी जाती है, क्योंकि इस पर संदेह करने का कोई गंभीर कारण नहीं है।

सह-प्रेषक भाई तीमुथियुस (आयत 1) का भी नाम है। तीमुथियुस पौलुस का जवान सहायक था। जो आम तौर पर पौलुस के दूत के रूप में काम करते हुए उसके साथ घूमता था। उसका नाम पौलुस के छह पत्रों में सह प्रेषक के रूप में बताया गया है (2 कुरिन्थियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों, 1 थिस्सलुनीकियों, 2 थिस्सलुनीकियों और फिलेमोन)। तीमुथियुस के वर्णन के लिए संभवतया सह-प्रेषक शब्द शायद सह लेखक से अधिक सही है, क्योंकि पत्र के पीछे का अधिकार पौलुस का ही है। आयत 4 से आरंभ करते हुए पौलुस ने बहुवचन सर्वनामों (हम) और (हमारे) के बजाए प्रथमपुरुष एकवचन सर्वनामों (मैं और मुझे) का इस्तेमाल किया। सम्बोधन में चाहे पौलुस के साथ तीमुथियुस का नाम दिया गया, परन्तु इस पत्र के पढ़े जाने के समय फिलेमोन की पूस्तक में पौलुस का स्वर ही सुनाई दिया।

प्राप्तकर्ता

पत्र हमारे फिलेमोन और बहिन अफ्फिया और हमारे साथी योद्धा अर्खिप्पुस और फिलेमोन के घर की कलीसिया के नाम (आयतें 1, 2) था। इस सम्बोधन की हर बात में विशेष ध्यान मिलता है।

फिलेमोन, फिलेमोन जिसका पता हमें उसके नाम वाले नये नियम के पत्र के द्वारा पता चलता है, जो एक दास का स्वामी था तथा जो पौलुस की सेवकाई के द्वारा मसीही बन गया था। नि:संदेह वह कुलुस्से की कलीसिया का सदस्य था और धनवान पुरुष था (दास का स्वामी जो अपने घर में कलीसिया को बुलाता था)। पौलुस ने कोमल शब्दों में उसका विवरण प्रिय भाई (आयत 1), भाई (आयतें 7, 20) और सहभागी (आयत 17) के रूप में किया है। यह पक्का नहीं है कि पौलुस ने उसे सीधे जेल में दिखाया था या किसी के द्वारा शायद इपफ्रास के काम के द्वारा (कुलुस्सियों 1:7)। जैसा भी हो पौलुस ने दृढ़तापूर्वक फिलेमोन को स्मरण करवाया, मेरा कर्म जो तुझ पर है वह तू ही है (आयत 19)। समय के साथ फिलेमोन परमेश्वर के राज्य में पौलुस का सहकर्मी बन गया था (आयत 1)। यह अभिव्यक्ति आयत 24 में फिर मिलती है जहां इपफ्रास मरकुस, अरिस्तर्खुस, देमास और लूका का वर्णन है। शब्द का उपयोग संकेत देता है कि पौलुस फिलेमोन को परमेश्वर के मिशन में सहकर्मी मानता था। इसका अर्थ चाहे यह हो कि साथ-साथ काम करते थे या एक ही उद्देश्य के लिए अलग अलग स्थानों में काम कर रहे थे, हम पक्का नहीं बता सकते।

अफ्फिया, पौलुस ने इस मसीही स्त्री का विवरण केवल हमारी बहन के रूप में दिया (आयत 2)। संभवतया वह फिलेमोन की पत्नी या बहन थी। जो भी वह फिलेमोन के घराने की प्रभावशाली महिला सदस्य थी।

अर्खिप्पुस, इस व्यक्ति को हमारे (पौलुस और तीमुथियुस) के साथी योद्धा (आयत 2) के रूप में दिखाया गया है, जो ऐसी अभिव्यक्ति है जिसे पौलुस ने फिलिप्पियों 2:25 में इपफ्रोदितुस के लिए इस्तेमाल किया। कुलुस्सियों 4:17 में पौलुस ने अर्खिप्पुस के लिए रहस्यमय निर्देश लिखा, जो सेवा प्रभु में तुझे सौंपी गई हैं, उसे सावधानी के साथ पूरी करना।

संभवतया वह फिलेमोन और अफ्फिया का भाई और उनका पुत्र था।

घर की कलीसिया। आज कलीसियाएं आमतौर पर उस विशेष उद्देश्य के लिए समर्पित भवनों में इक्ट्ठी होती हैं। परन्तु पहली सदी में कलीसियाएं आमतौर पर घरों में इक्ट्ठा होती थी (प्रेरितों 2:46; 5:42)। ऐसा होने पर जिन मसीही लोगों के घर इतने बड़े होते थे कि वे मण्डली को वहां बिठा सकें वे कलीसिया के मेजबान का काम करते थे। प्रिसका और अकविल्ला (रोमियों 16:3-5; 1 कुरिन्थियों 16:19) और नुमफास (कुलुस्सियों 4:15) इसका उदाहरण थे। फिलेमोन के पत्र में पौलुस का सम्बोधन उसके लेखों में केवल एक घटना है जहां उसने पत्र के अभिवादन में घर की कलीसिया का नाम लिया।

आयत 2 में ''के'' एक वचन में और संभवतया यह फिलेमोन की बात है (दिया गया पहला व्यक्ति और इस पत्र का मुख्य फोकस)। परन्तु भाषा इस संभावना को खुला रहने देती है कि अर्खिप्पुस (सर्वनाम से पहले दिया गया अंतिम नाम) हो सकता है। इससे भी महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि सम्बोधन के इस भाग को कैसे लेना चाहा होगा। फिलेमोन के पत्र को आमतौर पर व्यक्तिगत पत्र माना जाता है।

एफ.एफ. ब्रूस के विचार ने पूरी कलीसिया के सामने ऐसे व्यक्तिगत प्रश्न को रखना, चालाकी से और दबाव से काम करना होगा। ब्रूस ने दृढ़ता से कहा, पत्र निजी है, जो केवल फिलेमोन के लिए लिखा गया था, परन्तु अन्य लोग जो कुछ प्रेरित पौलुस के मन में था उसे कलीसिया का सकारात्मक दबाव मानते है। चर्चा में न केवल फिलेमोन के घर के अन्य सदस्यों (अफ्फिया और अर्खिप्पुस) को लाया गया, बल्कि पूरी कलीसिया को जो फिलेमोन के घर में इक्ट्ठा होती थी, भी बुलाया गया। मिलकर उन्होंने कठिन मुद्दे पर अपने साझा विचार के प्रभावों पर विचार करना था कि मसीही दासों और मसीही स्वामियों को मसीह के नाम में एक-दूसरे के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिए।

पूरी कलीसिया की भागीदारी, जो पहले एक निजी मामला लगती है, फिलेमोन के पत्र का सबसे शानदार पहलू हो सकती हैं मसीही विश्वास व्यक्तिगत है परन्तु यह निजी नहीं है। फिलेमोन को इसका पता पौलुस को उसे लिखे पत्र को कुलुस्सियों की कलीसिया में पढ़े जाने पर चला होगा। इसका अर्थ यह है कि फिलेमोन के नाम पत्र बहुत ही सार्वजनिक निजी पत्र है।

फिलेमोन और कुलुस्से

फिलेमोन और कुलुस्से की कलीसिया के नाम पौलुस के पत्र पर एक ही नगर के लोगों के लिए एक ही समय में लिख गए और एक ही वाहक द्वारा पहुंचाए गए लगते हैं। दोनों पत्रों में पाया जाने वाला सबसे मजबूत स्तब्ध कुलुस्सियों 4:7-9 में मिलता है-

प्रिय भाई और विश्वासयोग्य सेवक, तुखिकुस जो प्रभु में मेरा सहकर्मी है, मेरी सब बातें तुम्हें बता देगा। उसे मैं ने इसलिए तुम्हारे पास भी भेजा है, कि तुम्हें हमारी दशा मालूम हो जाए और वह तुम्हारे हृदयों को शांति दे। और उसके साथ उनेसिमुस को भी भेजा है, जो विश्वासयोग्य और प्रिय भाई और तुम ही में से है, ये तुम्हें यहां की सारी बातें बता देंगे।

इक्ट्ठा लेने पर प्रमाण से यह संकेत मिलता हुआ लगता है कि तुखिकुस और उनेसिमुस को पौलुस द्वारा दो पत्र देकर कुलुस्से में भेजा गया था जिसमें एक पूरी कलीसिया के नाम था और दूसरा कुलुस्से की कलीसिया के सदस्य फिलेमोन के नाम विशेषकर था।

लिखे जाने का समय व स्थान

फिलेमोन के नाम पत्र और इफिसियों, फिलिप्पियों और कुलुस्सियों के पत्रों को लम्बे समय से जेल की पत्रियां नाम दिया जाता रहा है। ये बात सच है कि विशाल भीतरी प्रमाण के कारण फिलेमोन के पौलुस के जेल में रहने के समय लिखे जाने पर कोई संदेह नहीं है

(आयतें 1, 9, 10, 13, 23)। परम्परागत विचार यही है कि जेल की चारों पत्रियां पौलुस द्वारा कारावास के दौरान लिखी गई जिसका विवरण प्रेरितों 28:30, 31 में मिलता है। यदि सचमुच में ऐसा है तो फिलेमोन के नाम पत्र 60 से 62 ईस्वी के लगभग लिखा गया जब पौलुस कैसर के सामने अपील करने की राह देखते हुए रोम में नजरबंद था।

रोम से कुलुस्से की दूरी एक सौ से अधिक मील है जिस कारण व्याख्याकर्ताओं को इसमें संदेह है कि उनेसिमुस इतना लम्बा सफर कैसे चला होगा। रोम के स्थान पर उनका सुझाव कैसरिया या इफिस्सुस है। कैसरिया में पौलुस के कारावास का उल्लेख प्रेरितों 23:31-27:1 में है जो 57 से 59 ईस्वी के लगभग हुआ। नये नियम में इफिसुस के कारावास का विशेष उल्लेख नहीं है परन्तु यह लगभग 52 से 54 ईस्वी में हुआ हो सकता है। (देखें 8, 9 पर)।

उनेसिमुस के लिए इफिसुस में जाने के लिए एक सप्ताह से कम का सफर होगा जबकि कैसरिया में जाने से थोड़ा अधिक समय लगता होगा। बेशक रोम को जाने के लिए कहीं अधिक समय और कहीं अधिक धन लगता होगा। अपने आकार के कारण रोम ने पौलुस के वहां पहुंचने पर पौलुस को ढूंढ़ने में भी उनेसिमुस के लिए बड़ी चुनौती होना था। परन्तु रोम नगर का आकार और लम्बी यात्रा उनेसिमुस के वहां जाने के कारण हो सकते हैं। रोम कुलुस्से से काफी दूरी पर था और वहां गायब होना आसान था जिससे उदण्डता से तलाश करने वाले भगौड़े दास के लिए अच्छा था।

हमारा प्रमाण चाहे इफिसुस या कैसरिया के लिए दिया जा सकता है जहां पौलुस ने फिलेमोन के नाम अपना यह पत्र लिखा, परन्तु यह टीका इस दृष्टिकोण से लिखा गया है कि यह पत्र 60 ईस्वी के आरंभ के वर्षों में रोम से भेजा गया था। फिलेमोन के नाम पत्र की व्याख्या इसके लिखे जाने की स्थिति या लिखने के समय पौलुस के कारावास के स्थान पर निर्भर नहीं है। उनेसिमुस को पौलुस रोम, कैसरिया या इफिसुस में मिला हो इसका उस जबर्दस्त संदेश पर प्रभाव नहीं पड़ता जो उनेसिमुस ने पहली शताब्दी के मध्य में कहीं कुलुस्से में लौटने पर अपने स्वामी को सौंपा।

पहली शताब्दी ईस्वी में दासता

पहली शताब्दी का रोमी सम्राज्य दासता वाली संस्कृति वाला था। उस समय के बड़े नगरों में कुल जनसंख्या से एक तिहाई से अधिक भाग दासों का था। कोई कई प्रकार से दास बनता था, (1) युद्ध में पराजय, (2) डाकबजनी के द्वारा, (3) कर्ज की अदायगी के लिए अपने आपको बेचना, (4) कर्ज के लिए अदालत द्वारा दण्ड, (5) अवांछित बालक जिसे मरने के लिए छोड़ दिया गया हो या (6) दास माता से जन्मा बच्चा। पहली सदी के अधिकतर दास दास्तव में ही जन्म लेते थे। कइयों के पिता दासों के स्वामी होते थे और उनकी माता दासी।

दास के लिए जीवन का गुणवत्ता दास के स्वामी द्वारा किए गए व्यवहार पर निर्भर करती थी। रोमी कानून में दासों को मानवीय जीवों के रूप में माना जाता है परन्तु कानूनी व्यक्तियों के रूप में नहीं। कानूनी तौर पर दासों के विवाह, परिवार या मीरास नहीं होती थी। वे अपने आपको अदालत में पेश नहीं कर सकते थे और आपराधिक गतिविधियों के लिए अपने स्वामियों से उन्हें कठोर दण्ड दिया जाता था।

कुछ परिस्थितियों में दासता खतरनाक स्थिति हो सकती थी परन्तु बहुत से दासों के साथ अच्छा बर्ताव किया जाता था और कइयों को तीस की उम्र तक स्वतंत्रता पाने का अवसर मिल जाता था। पहली सदी के रोमी सम्राज्य में दासता को बुरी तरह से अपमानजनक नहीं माना जाता था। इसे केवल संस्कृति और प्रबंध के एक आवश्यक भाग के रूप में देखा जाता था। आमतौर पर बाजार में दासों और स्वतंत्र लोगों के बीच अन्तर करना कठिन होता

था क्योंकि आमतौर पर दोनों ही समूह एक ही काम करते थे। विशिष्ट रूप में दास अपने स्वामियों से शारीरिक या बौद्धिक रूप में कम नहीं होते थे। कई बहुत पढ़े लिखे होते थे और अधिकतर शिक्षकों के रूप में काम करते थे। कई मामलों में दास स्वयं दासों के स्वामी होते थे।

नया नियम संकेत देता है कि आरंभिक कलीसिया में दास और दासों के स्वामी दोनों होते थे (इफिसियों 6:5-9; कुलुस्सियों 3:22-4:1)। दासों को ईमानदार और कठिन परिश्रम करने वाले होने को कहा जाता था जबकि उसके स्वामियों को न्यायप्रिय और निष्पक्ष होना सिखाया जाता था। दासों और उनके स्वामियों को प्रभु को सब लोगों के स्वामी के रूप में मानना आवश्यक था (कुलुस्सियों 4:1)। नये नियम में दासता को सीधे गलत नहीं कहा जाता था परन्तु मसीह के सुसमाचार में ऐसे परिवर्तन ला दिए जिन से अन्त में दास प्रथा संसार के कई भागों में हो गई।

माइकल आर. वीड का अवलोकन है, ''स्वतंत्रता और समानता के सुसमाचार का प्रचार करते हुए आरंभिक कलीसिया दासता और अन्याय से भरे संसार के साथ केवल अस्थाई भेद कर सकते थे''। दास्ता की प्रथा और मसीही भाइचारे के लिए बुलाहट के बीच यह तनाव फिलेमोन के नाम पौलुस के पत्र की त्वरित पृष्ठभूमि का काम करता है।

अगुवे का अनुसरण करें

अर्ल ऐड्वर्डस

हम ऐसे जीवन कैसे जला सकते हैं जो दूसरों के लिए उपयोगी और लाभदायक हों? नऐ नियम की पुस्तकें हमें इस प्रश्न के उत्तर की सहायता के लिए दो दृष्टिकोण प्रदान करती हैं।

पहला, नया नियम हमें परमेश्वर का चित्र देता है। परमेश्वर ने यीशु को भेजा और हमारे लिए उसके सांसारिक जीवन का वर्णन सुसमाचार में दिया गया है। प्रभु यीशु परमेश्वर के तथ्व की छाप है (इब्रानियों 1:3)। जब हम पढ़ते है यीशु ने क्या सोचा, क्या और मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना में क्या किया, हम देखते हैं कि परमेश्वर क्या सोचेगा, परमेश्वर क्या कहेगा और परमेश्वर क्या करेगा।

दूसरा, नया नियम हमें परमेश्वर के लोगों का चित्र देता है। प्रेरितों के काम की पुस्तक दर्शाती है लोगों ने कैसे प्रत्युत्तर दिया जब उनको परमेश्वर के विषय सिखाया गया जैसे वह यीशु के जीवन में दर्शाया गया था। परमेश्वर चाहता था कि लोग उसे ढूंढ़े, उसको उत्तर दें और उसके मित्र बन जाएं, और सुसमाचार के प्रचारकों ने सिखाया कि यही परमेश्वर की मंशा थी (देखें प्रेरितों के काम 17:26, 27)। उन्होंने यह भी सिखाया यह मित्रता पश्चाताप और अज्ञापालन से कैसे वास्तविक मित्रता बन सकेगी (देखें प्रेरितों के काम 17:30)। प्रेरितों के काम की पुस्तक भिन्न देशों, संस्कृतियों और विश्वास के लोगों के प्रत्युत्तर का वर्णन करती है जब उनके जीवनों की तुलना यीशु के जीवन के साथ की गई। बहुत से लोगों ने अपने जीवनों को बदलने से मना कर दिया, परन्तु कुछ ने परमेश्वर के द्वारा प्रस्तुत की गई मित्रता को ग्रहण किया और वे मसीही बन गए। प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ने के द्वारा हम आज परमेश्वर के उद्धार के प्रस्ताव के प्रति सही प्रत्युत्तर को देख सकते हैं।

नये नियम के पत्र या पत्रियां, नए मसीहीयों की सहायता के लिए लिखी गई जब उनको परमेश्वर के चरित्र और स्वयं के बीच संघर्ष करना पड़ा। वे पुस्तकें हमें हमारे अपने स्वभाव और कलीसिया के अन्य लोगों के स्वभाव दोनों को समझने में सहायता कर सकती हैं। वे दर्शाती है कैसे परमेश्वर हमारे जीवनों में मसीहियों के रूप में कार्य कर सकता है और

हमें व्यक्तिगत रूप से और परमेश्वर के लोग कलीसिया के रूप में दोनों में कैसे फलवंत और प्रभावशाली बना सकता है।

थिस्सलुनीकियों की पहली पत्री मकिदुनिया के थिस्सलुनीके (आज इसे सालोनिका कहा जाता है) नगर के नए विश्वासी मसीहियों के लिए लिखी गई, यह नगर यूनान के उत्तर दिशा में स्थित है। पौलुस, सिलवानुस (या सीलास), और तीमुथियुस फिलिप्पी में प्रचार करने के बाद वहां गए थे और बिरिया, अथेने और कुरिन्थुस जाने से पहले। कुछ थिस्सलुनीके वासियों ने बड़े हर्ष से सुसमाचार का प्रत्युत्तर दिया। भले ही उनका उन लोगों के द्वारा अपमान किया गया जिन्होंने परमेश्वर के संदेश पर विश्वास करने से इंकार किया था (प्रेरितों के काम 17:1-9)। थिस्सलुनीकियों को लिखे गए दो पत्रों में पहला पत्र नए विश्वासियों को इन प्रचारकों के वहां से जाने के बाद लिखा गया। यह नए मसीहीयों को विश्वासी बने रहने और परमेश्वर के साथ और अन्य लोगों के साथ संबंधों में विकास लाने में सहायता करने के लिए लिखा गया।

यह पुस्तक हम शिक्षकों का प्रचारकों के लिए हमारे लोगों के साथ कार्य करने के तरीके संबंधी विशेषकर संगी मसीहियों के साथ एक महत्वपूर्ण पाठ प्रस्तुत करती है। प्रभु यीशु का अनुसरण करने के लिए हम एक दूसरे को और हमारे परिवारों की कैसे सहायता कर सकते हैं?

यीशु के अनुसरण में पिछली उपलब्धियां सबसे पहले जिस तरीके से लोगों को यह देखते हुए सहायता कर सकते हैं उनके जीवनों के लिए भली बात क्या है और उनहीं भले गुणों के मूल्य पर हम जोर दे सकते हैं। लोगों के जीवनों में जो भली बात पाई जाए उसी के आधार पर भविष्य में उन्नति हो सकेगी। अक्सर, लोगों की उन्नति करने की कोशिश में, हम उन कार्यों और गुणों की अनदेखी कर देते हैं या कम ध्यान देते हैं जिन्हें परमेश्वर पहले ही से उनके जीवनों में मान्यता देता है। परमेश्वर चाहता है कि हम अन्य लोगों में उन बातों पर जोर दें।

इस दृष्टिकोण का प्रयोग 1 थिस्सलुनीकियों के लेखक के द्वारा किया गया था। पत्र का आरंभ परमेश्वर के साथ और एक दूसरे के साथ अच्छे संबंधों को याद करने से हुआ जिसे इन लोगों ने कुछ महीने और अपने मसीही जीवनों के कुछ वर्ष पहले ही आरंभ किया था (1:6, 9, 10)। पुस्तक का यह महत्वपूर्ण भाग पुस्तक के पहले पूरे तीन अध्यायों को समेटता है जो कि पुस्तक का लगभग आधा भाग है।

थिस्सलुनीकियों ने परमेश्वर का अनुसरण करने की महत्वता को जान लिया था और सुसमाचार को परमेश्वर के संदेश के रूप में मानकर विश्वास किया (2:13)। वे यीशु के द्वारा परमेश्वर के अनुयायी बन गए थे। उन्होंने यह भी महसूस किया कि परमेश्वर का अनुसरण करने की सहायता के लिए एक उपाय है कि अपने संगी मसीहियों के जीवनों को ध्यान से देखें और उनके द्वारा दर्शाए गए कार्य और व्यवहार को ग्रहण किया जाए। थिस्सलुनीके के लोग दूसरे धर्मी लोगों के उदाहरण का अनुसरण कर रहे थे (1:6; 2:14), और उनका भी धर्मी उदाहरण था जिसे दूसरे मसीहियों को अनुसरण करना था (1:7)। इन सब घटनाओं को बड़े हर्ष के साथ इस पुस्तक में याद किया गया था ताकि यह नए मसीही जान जाए कि उनके पिछले जीवन में क्या ईश्वरीय मान्यता थी और वर्तमान व्यवहार क्या है।

अच्छे कार्यों की सराहना दूसरों के साथ अच्छे संबंधों को बनाए रखने का एक भाग है और यह उनकी उन्नति में सहायक है। जब अच्छे गुणों को अनदेखा कर दिया जाता है या उन्हें हल्के रूप में लिया जाता है, तो संबंध टूट सकते हैं और दूसरों की उन्नति में सहायता करने के हमारे प्रयत्न अवरूद्ध हो सकते हैं।

वे बच्चे जो अपने माता-पिता से मात्र आलोचना ही सुनते हैं वे स्वयं को नालायक

और अप्रिय महसूस करते हैं। परिणाम माता-पिता बच्चों के बीच का संबंध टूट जाता है, माता-पिता की सलाह प्रभावहीन हो जाती है। इसके विपरीत, यदि बच्चों को अपने माता-पिता की ओर से प्रेम का आश्वासन मिलता रहे और उनकी भलाई में उनकी रूचि दिखाई दे, तब वे माता-पिता की सलाह और उनके आदर्श पर अधिक ध्यान देते हैं। बच्चों को यह जानना चाहिए कि उनके माता-पिता का आदेश उनकी प्यार भरे चिंता वाले हृदय से आते हैं। यह सोचने की बजाय कि उनके माता-पिता उन पर हुक्म चलाना पसंद करते हैं, बच्चों को यह भरोसा करना चाहिए कि उनके माता-पिता उनसे प्रेम करते हैं।

उसी तरह, से बड़े भी आलोचक और न्यायी के रूप में देखे जा सकते हैं इसके बजाय कि मित्र और भाई, यदि वे हमेशा ही उनसे आलोचना या हुक्म ही सुनते रहते हैं और उनके जीवन में चित्रण नहीं देखते हैं जो उनको सिखाते है। परमेश्वर या वचन हमें लोगों के जीवन में भली बातें देखने में सहायता कर सकता है।

जब पौलुस ने फिलिप्पियों को लिखा, तो उसने उनको उन बातों पर विचार करने के लिए कहा जो बातें सत्य हैं, आदरणीय हैं, उचित हैं, पवित्र हैं, जो सुहावनी हैं, और जो मनभावनी हैं (फिलिप्पियों 4:8)। इस पत्र में थिस्सलुनीके में मसीहियों के लिए अपनी ही शिक्षा का अनुसरण करते हुए, उसने उनके जीवनों में इन गुणों का वर्णन किया और उनकी प्रशंसा की।

यीशु के अनुसरण में भविष्य की उन्नति। लोगों की सहायता करने का दूसरा उपाय भविष्य में मसीह में बढ़ने के महत्व पर जोर देना है। परमेश्वर संसार के लिए अपनी योजनाओं में हम से प्रत्येक का उपयोग करना चाहता है। वह हमारा उपयोग करेगा यदि हम उसे हमारे जीवनों का मार्गदर्शन करने दें।

1 थिस्सलुनीकियों की पत्री में मसीहियों को परिपक्वता की ओर उनके अच्छे आरंभ के द्वारा बढ़ने के लिए उत्साहित करने को इस दृष्टिकोण का प्रयोग किया गया। अध्याय 4 शब्द इसलिए आरंभ होता है यह इस कारण से नहीं कि पत्र समाप्त होने पर है, बल्कि लेखक भविष्य की उन्नति के लिए निर्देश दे रहा है जो बातें पहले उन्होंने प्राप्त कर ली थीं (4:1, 10)। अंतिम दो अध्याय नए मसीहियों को परिपक्वता की ओर बढ़ने में सहायता करने के लिए निर्देश देते हैं।

हमें अपने पापों से पश्चाताप करना है और प्रलोभन और झूठी शिक्षा से होने वाले खतरे को जानना है। परन्तु, मसीही परिपक्वता पाप को जान लेने और इससे दूर रहने से नहीं आती है। वास्तविक परिपक्वता तभी आएगी जब भले लोग पाप से दूर रहेंगे और जो उनके जीवन में पहले ही से भला है उस पर बनते जाएंगे और परिपक्व होने के लिए अपने अगुवे यीशु मसीह का अनुसरण करेंगे। लोगों की पहले की उन्नति के लिए उनका धन्यवाद करने के बाद, हम उन्हें परिपक्व होने का अंग बताने के लिए परमेश्वर के वचन का प्रयोग करने की उनसे विनती कर सकते हैं।

प्रत्येक मसीही में उन्नति करने की क्षमता है। कई बार, लोग उन्नति करने का प्रयास नहीं करते; वे इस निष्कर्ष पर पहुंच जाते हैं कि उनको उन्नति करने की जरूरत नहीं है या वे उन्नति नहीं कर सकते। लोगों के प्रति इस तरह का व्यवहार रखने से शिक्षक इस बात के लिए दोषी ठहर सकते हैं। यदि हमारे विद्यार्थियों के प्रति इस तरह के विचार हैं, तो परिपक्वता के लिए उनकी सहायता करना असंभव होगा।

फिलिप्पियों के विश्वासियों को लिखे अपने पत्र में, पौलुस ने लिखा और मुझे इस बात का भरोसा है, कि जिस ने तुम में अच्छा काम आरंभ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा (फिलिप्पियों 1:6)। उसी तरह से थिस्सलुनीकियों की उन्नति के लिए उसने चार बार धन्यवाद प्रकट किया और उन्हें उन्नति करने के लिए बढ़ने के लिए

और अधिक बढ़ने के लिए और मानने के लिए उत्साहित किया (3:12; 4:1, 10, 5:11)। हमें बढ़ना है और अपने संगी मसीहियों की सामर्थ्य में आत्मविश्वास को प्रकट करना है।

हम में से प्रत्येक के लिए परमेश्वर की योजनाएं हैं। नये नियम की पत्रियां इसके प्रमाण हैं। यह पत्रियां हम सब की बढ़ने में सहायता कर सकती हैं। एक बार जब हम दूसरे लोगों में मसीही जीवन के अच्छे आरंभ को दर्शा देते हैं तो हमें उनकी बढ़ोतरी के लिए उनके जीवन में सक्षमता को ढूंढ़ने के लिए कड़ा परिश्रम करना चाहिए।

उपसंहार, यदि हम कुछ मसीहियों के साथ ऐसा व्यवहार करें जैसे कि वे निकम्मे हैं क्योंकि हम उनके जीवनों में कुछ पाप देख सकते हैं, यदि हम उनके जीवनों में कुछ अच्छे कार्यों की सराहना करने की अनदेखी करते हैं, यदि हम सोचते हैं कि केवल परिपक्व लोग ही बढ़ सकते हैं तो हम 1 थिस्सलुनीकियों की पत्री पर ध्यान देने के द्वारा उनकी सहायता कर सकते हैं।

थिस्सलुनीके के विश्वासियों ने अपने अगुवे अर्थात यीशु का अनुसरण करने का बहुत बड़ा कार्य किया। हमारा विषय क्या है? क्या हमारा इरादा उसका अनुसरण करना है, अन्य लोगों के शब्दों से ऊपर उठकर उसकी सलाह को मान्यता दें, उसे अपने रोजाना के जीवन में उदाहरण के रूप में प्रयोग करें? थिस्सलुनीकियों के विश्वासियों ने अपने शिक्षकों के व्यवहार और कार्यों में यीशु को देखा। इससे उनके लिए यह सीखना आसान हो गया कि कैसे अपने स्वामी का अनुसरण करें। क्या हम उनकी प्रशंसा करके, और उन्हें देखकर सीखते हुए कि कैसे जीना है, अच्छे उदाहरण की तलाश करते हैं? क्या हमने अपने अगुवे का व्यावहारिक रूप से अनुसरण करने का निश्चय किया है उन बातों को देखने के द्वारा जिससे उसका जीवन दूसरों के द्वारा प्रदर्शित किया गया हो? क्या हम अच्छे कार्यों को दर्शाने के लिए दूसरे लोगों पर छोड़ने का प्रयास कर रहे हैं कि यीशु ऐसा करेगा? क्या हम पौलुस की तरह कह सकते हैं, तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं (1 कुरिन्थियों 1151)? उसने कहा, जो बातें तुम ने मुझ से सीखी, और ग्रहण की, और सुनी और मुझ में देखी, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शांति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा (फिलिप्पियों 4:9)। आइए हम इस तरह का जीवन व्यतीत करें ताकि हम यह बात कह सकें।

अपने अगुवे का अनुसरण करने का परिणाम क्या है? उसके साथ स्वर्ग में होना। एक विषय जो पूरे थिस्सलुनीकियों की पहली पत्री में है वह यीशु की वापसी है। इसका प्रत्येक अध्याय में वर्णन किया गया है (1:10; 2:19; 3:13; 4:14-17; 5:1-3, 23)। यीशु की वापसी पर गहन ध्यान इसलिए नहीं था क्योंकि थिस्सलुनीके लोग इसके विषय नहीं जानते थे, न ही इस कारण से था कि उनके जीवनों में बदलाव लाने के लिए उनको भयभीत करने की जरूरत थी। इस बात पर जोर देने का मुख्य कारण यह था कि उन्हें अपने जीवन में एक सकारातमक और परिपक्व दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता करे। वे यीशु के समान बनना और भविष्य में यीशु के साथ रहना चाहेंगे।

मसीह में अपने नए जीवन का थिस्सलुनीके के विश्वासियों ने एक अच्छा आरंभ किया था। वे परिपक्वता की ओर जा सकते थे। इसका चरम उनके लिए अपने परमेश्वर की उपस्थिति में अनंतकाल तक वास करना होगा।

यीशु की वापसी की लगातार चेतावनी आशा का स्रोत था। इस अधूरे संसार में मसीहियों का कभी भी स्थायी घर नहीं होगा। जी उठे यीशु में विश्वास करने का अर्थ है कि उसके साथ रहने के लिए और जो उसके अनुयायी है उनके साथ रहने के लिए हम यीशु के आने की बाट जोह सकते हैं। जो मर चुके है। उनके लिए यह सत्य है उतना ही उनके लिए निश्चित है जो अभी भी जीवित हैं। जीवन के अन्त के लिए जोर देता तब यह मृत्यु

नहीं है हम भले ही यीशु के आने से पहले मर जाएं। 1 थिस्सलुनीकियां का जोर अनन्त जीवन पर है जो अभी आरंभ हुआ है और जब वह वापस आएगा तो उसके साथ अनंतकाल में आनन्द होगा। हमें इस जीवन में और आने वाले जीवन के लिए अपने अगुवे का अनुसरण करना है। एक मसीही की महान आशा महिमा में यीशु का अनुसरण करना है।

यहूदा के गोत्र का सिंह

जिम ई. वॉलड्रन

अब तक हमने पुराने और नए नियम दोनों से यह देखा है कि भविष्यवाणियों के अनुसार यीशु मसीह नासरी, परमेश्वर का एकलौता पुत्र, अब इस समय परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठकर विराजमान है। हम ने यह भी देखा है, कि उसके राज्य का आरंभ उस पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था जो यीशु के पुनरुत्थान के पचास दिन के बाद आया था और उसी दिन लगभग 3000 इस्राएली उसमें मिलाए गए थे। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के 5 अध्याय में हम पढ़ते हैं कि प्रतीकात्मक शब्दों में लेखक ने मसीह के राज्याभिषेक का वर्णन इन शब्दों में किया है:

> "इस पर उन प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा, "मत रो; देख, यहूदा के गोत्र का वह सिंह जो दाऊद का मूल है उस पुस्तक को खोलने और उसकी सातों मुहरें तोड़ने के लिये जयवन्त हुआ है।" तब मैंने उस सिंहासन और चारों प्राणियों और उन प्राचीनों के बीच में, मानो एक वध किया हुआ मेम्ना खड़ा हुआ देखा। उसके सात सींग और सात आँखें थीं; ये परमेश्वर की सातों आत्माएं हैं जो सारी पृथ्वी पर भेजी गई हैं। उसने आकर उसके दाहिने हाथ से जो सिंहासन पर बैठा था, वह पुस्तक ले ली।" (प्रकाशितवाक्य 5:5-7)।

न सिर्फ यहीं पर किन्तु इसी पुस्तक के 12 अध्याय में भी इसका (राज्याभिषेक का) सांकेतिक वर्णन हमें इस प्रकार पढ़ने को मिलता है:

> "फिर स्वर्ग में एक बड़ा चिन्ह् दिखाई दिया, अर्थात् एक स्त्री जो सूर्य ओढ़े हुए थी, और चाँद उसके पाँवों तले था, और उसके सिर पर बारह तारों का मुकुट था। वह गर्भवती हुई, और चिल्लाती थी, क्योंकि प्रसव की पीड़ा उसे लगी थी और वह बच्चा जनने की पीड़ा में थी। और वह बेटा जनी जो लोहे का दण्ड लिये हुए सब जातियों पर राज्य करने पर था, और वह बच्चा एकाएक परमेश्वर के पास और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुंचा दिया गया।" (प्रकाशितवाक्य 12:1-2, 5)।

ये दोनों ही प्रकाशन (प्रकाशितवाक्य 5:6-7; 12:5) उन सब बातों की पुष्टि करते हैं जिनका वर्णन हमें प्रेरितों की पुस्तक के दूसरे अध्याय में मिलता है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का विषय ही मुख्य रूप से परमेश्वर के लोगों की विजय को और उसके पुत्र की महिमा को प्रकाश में लाना है, और उसके पुत्र को उसके सीधे हाथ पर बैठकर **यहूदा के गोत्र के सिंह** के रूप में राजाओं का राजा बनकर शासन करते दिखाना है।